

स्वाजसमा^{११}ध^{११}ल्लाम्भिसु-इ. भ्याम्भ्यस्-इ.सिभ्याम्भ्यस्-
इ.सौसाम्-इथोस्सुप् । सुपः ।

द्विवचन - सुपस्रीणि त्रीणि क्यनान्यैकश एकवचन
बहुवचन सम्भ्रानि स्युः ।

सम्पूर्ण त्रिकां का वचनबोधक पत्र नीचे दिया जा रहा है:

| त्रिकांक / विभक्ति | एकवचन | द्विवचन | बहुवचन |
|--------------------|------------|---------|-----------|
| 1 (प्रथमा) | सु (सु) | औ | जसु (असु) |
| 2 (द्वितीया) | अम् | ओट् (औ) | शसु (असु) |
| 3 (तृतीया) | टा (आ) | भ्याम् | भिसु |
| 4 (चतुर्थी) | इ. (स) | भ्याम् | भ्यसु |
| 5 (पञ्चमी) | इ.सि (असु) | भ्याम् | भ्यसु |
| 6 (षष्ठी) | इ.सु (असु) | आसु | आम् |
| 7 (सप्तमी) | इ. (इ) | ओसु | सुप् (सु) |

द्वयकमो द्विवचन क्वचन ।

द्विलेकत्वयोरने स्तः

विरामोऽवसानम् ।

वर्णानामभावोऽवसानसंज्ञः स्यात् । लृत्वविसर्गो